

Name of the college - APSM College, Basuni, Bagra

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)

Dept - A.H & C

Lesson/Plan for class - BA, A.H & C(H), Part-1, paper-1

Date - 10-04-2021

Name of the topic - Regional dynasties - The Cholas.

### The Cholas dynasties.

#### चोल वंश

सैराज्यनीज की

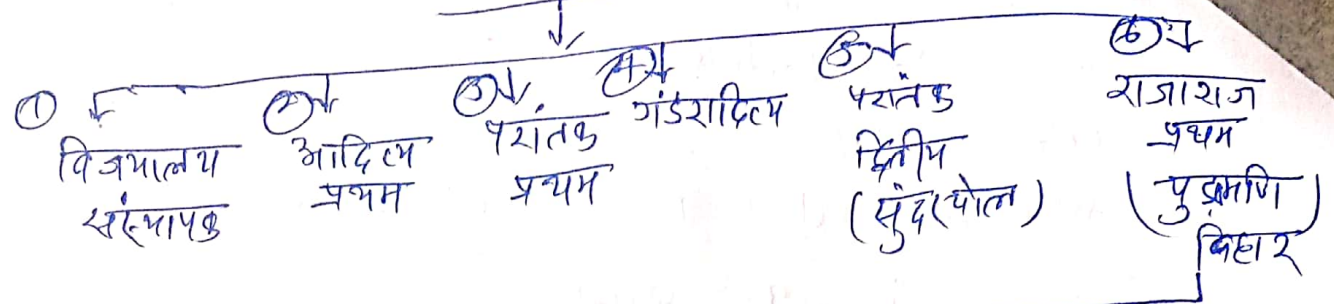
इंडिका तथा अशोक के अभिलेखों में 'चोलो' का उल्लेख किया गया है। 9वीं - 12वीं शताब्दी तक चोल वंश में तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश व कर्नाटक पर शासन किया। इन राजाओं में चौथी शताब्दी के राजाओं में अंग देव इतिहासकारों ने शही चोल नाम दिया है। 8वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से पुनः चोलों की राजनीतिक सत्ता का उदय हुआ। इस समय तक दक्षिण भारत में राष्ट्रकूटों, पालुक्कै, पल्लवों और पोंड्यै में सर्वोच्चता के लिए संघर्ष हो रहा था। पुल्लै शक्तिचो का पतन हो रहा था और नई शक्तिचो का उदय हो रहा था।

पल्लव-पोंड्य संघर्ष ने

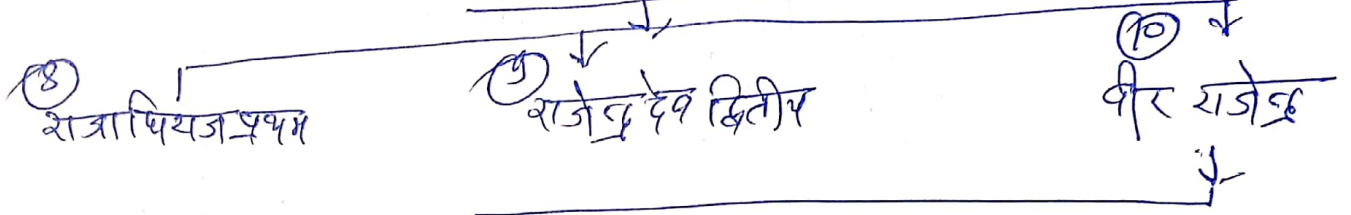
पल्लवों की शक्ति कमजोर कर दी जिसका लाभ चोलों ने उठाया। 9वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक चोलों ने दक्षिण भारतीय राजनीति पर अपना आधिपत्य एवं प्रभाव बनाए रखा। अंग देव पोंड्यै के चोलों की स्वतंत्र सत्ता समाप्त कर दी। चोलों का प्रारम्भिक इतिहास संतम युग से प्रारम्भ होता है। कश्मिक ने 'उदयु' को अपनी राजधानी बनाया था।

2

### चौल वंश



7. राजेन्द्र प्रथम (चौल झील निर्माण)

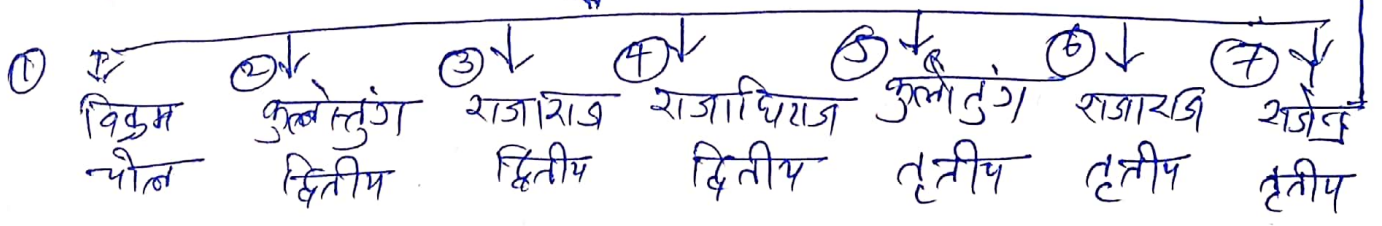


11. अधिराजेन्द्र

चौल-पालु वंश

मधुशक्तिका + कुलोत्तुंग प्रथम  
मधुशक्तिका का विवाह कुलोत्तुंग प्रथम के हुआ।

अंतिम कृत्य  
चौल शासक



(3)

प्रमुरव शासक : — चौल वंश के प्रमुरव शासक

- (1) विजयालय 850-875 (3) पराकान्त प्रथम - (907-953 ई.)
- (2) आदित्य प्रथम 875-907 (4) गंडरादित्य - (953-956 ई.)
- (5) परान्तक द्वितीय - (956-979 ई.) (6) अटिमोलि वर्मन / राजाजयप्रथम (985-1014 ई.)

(1) विजयालय → (850 - 875)  
विजयालय को चौल साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक भी माना जाता है। विजयालय ने पाण्डुय शासकों से तंजौर (विजापुर) को छीन कर उरैयूर को स्थान पर इन्हें अपने राज्य की राजधानी बनाया। विजयालय ने पाल्लवों की उपाधि धारण की थी।

(2) आदित्य प्रथम - (875 - 907 ई.)

विजयालय का पुत्र एवं उत्तराधिकारी आदित्य प्रथम लगभग 875 ई. में चौल राजसिंहासन पर बैठे। आदित्य प्रथम ने कौडण्डराम को उपाधि धारण की।

(3) पराकान्तक प्रथम → (907-953 ई.)

आदित्य प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र परान्तक प्रथम चौल राजगद्दी पर बैठे। परान्तक प्रथम ने 'मडुलकौण्ड' की उपाधि धारण की थी।

(4) गंडरादित्य : — (953 - 956 ई.)

पराकान्तक प्रथम के बाद क्रमशः गंडरादित्य (953 - 956) व परान्तक



द्वितीय (956 ई. 973 ई.) एवं 'उत्तर चोल' योद्धा  
के शासक हुए। इसमें सबसे योग्य पालक द्वितीय था।

(5) परान्तक द्वितीय (956 - 973 ई.)

चोल शासक पालक द्वितीय को  
सुन्दरचोल के नाम से भी जाना जाता था।  
उसने तत्कालीन पाण्ड्य शासक 'वीरपाण्ड्य'  
को चेन्नू के मैदान में पराजित किया।

(6) अरिमोलिवर्मिन / राजराज प्रथम - (985 - 1014 ई.)

परान्तक द्वितीय का पुत्र एवं  
उत्तराधिकारी अरिमोलिवर्मिन अथवा राजराज  
प्रथम परान्तक द्वितीय के बाद चोल राज्य  
के सिंहासन पर बैठे। उसने अपने पालक  
प्रथम को 'मौर्य रक्त' की नीति का पालन  
करते हुए 'राजराज' की उपाधि ग्रहण की।  
राजराज ने काण्डलूर शासक 'कलमल' की  
उपाधि ग्रहण की। राजराज ने मालका के  
उत्तरी भाग पर अधिकार करके उसे चोल  
साम्राज्य का एक नया प्रान्त बनाया  
और उसे 'कुण्डिचोल मैसलम' नाम दिया।

राजराज ने अनुत्थापुर  
के स्थान पर चोलमल्लना को अपनी  
राजधानी बनाई तथा इसका नाम  
नय नाथ मैसलम रखा। राजराज ने  
'शिवपादशेखर' की उपाधि ग्रहण की  
पालक प्रथम ने 'मामुषी चोलमण्डलम' का

- रखा । एवं 'पोलीव्रान्वा' की उत्तरी राजधानी बनाया ।  
इन्होंने 'तेजापुर में 'बृहदेश्वर मंदिर' का निर्माण करवाया था ।

चोल राष्ट्र या चोल भंडलम्, पेंनार और कावेरी नदियों की बीच पूर्वी समुद्र तट पर स्थित था । चोल राजाओं की अनुत्पत्ति इतकी सीमाएँ भी बढ़ती रहती थी । इसके साम्राज्य के प्रथम केंद्रों में अंगपुर (अंगूरु त्रिचनापल्ली के पास) कावेरीपट्टनम (कावेरी तट पर प्रसिद्ध चंद्रगिरि) तेजापुर (तेजापुर और गंगी काठ) - चोलापुरम हैं

काञ्ची शक्ति के रूप में ही चोलों का इतिहास मौर्यवंशी अशोक की काल तक चला जाता है । किंतु हम एक साम्राज्यिक शक्ति के रूप में चोलों की चर्चा करेंगे और इस दृष्टि से उनका इतिहास नची शताब्दी की अंत में आरंभ होता है । चोल वंश का पहला राजा विजयप्रिय (विजयालय) हुआ । जिसने अपने बल पर स्वयं का परिचय दिया । वह पहले पल्लवों का सामंत था । उसने दक्षिण में बढकर तेजापुर पर अधिकार कर लिया । आदिप्रथम - (980-907 ई.) ने चोलों की पूर्ण रूप से स्वतंत्र घोषित किया । इन्द्र

- देश में चोल - आधिपत्य की स्थापना वास्तव में प्रथम पाल्लव (907 - 946 ई.) की समय में हुई । उसने मधुरा के पाण्ड्य राजा की हराया उशीर 'मदुरैकोड' की उपाधि ली । उसने लंका पर भी आक्रमण किया था । पाल्लव की पुत्रों के समय में चोलों की शक्ति कुछ समय के लिए मंद पड़ गई ।

महारी कुमारी